JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

फरीदाबाद के निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य / प्रधानचार्या की नेतृत्व शैली और शिक्षकों कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रो० डॉ. श्रीमती मंजु शर्मा

शिक्षा विभाग,ललिता ललिता देवी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड साइंसेज, नई दिल्ली

मधु

(शोध विद्यार्थी, लिंग्याज विद्यापीठ नचौली, फरीदाबाद, हरियाणा)

सारांश

नेतृत्व एक मूल्य-परक अवधारणा है। आज भी नेतृत्व को एक व्यक्तिगत योग्यता के रूप में देखा जाता है। नेतृत्व एक ऐसा शब्द है दिमाग में आते ही राजनीति का बोध करता है। लेकिन ऐसा नहीं है यह असीमित है। समाज के विभिन्न क्षेत्रों, समाजिक , राजनीतिक, आर्थिक प्रशासनिक एवं शैक्षिक आदि में नवीन परिवर्तन आता हैं। विद्यालय एक सामाजिक संस्था हैं। जहां शिक्षक तथा अन्य कर्मचारी एक संगठित समूह के रुप में शैक्षिक कार्य करते हैं।

माध्यमिक विद्यालय में भी शिक्षक अपने- अपने-उत्तरदायित्वों का पालन करते हैं। जिनका नेतृत्व विद्यालय का प्रधानाचार्य करता हैं। उसका नेतृत्व तभी सफल माना जाता हैं। जब सभी शिक्षक उसकी योग्यता, अनुभव, कार्यकुशलता तथा ज्ञान से प्रभावित होते हैं और उसके सहयोग प्रदान करते हैं। प्रधानचार्य/प्रधानाचार्या मित्र शैली संस्था और शिक्षकों को प्रभावित करती हैं।

एक प्रधानचार्य/प्रधानाचार्या व्यक्तिगत गुणों से विभूषित होना चाहिए। उसके व्यक्तित्व में वे गुण होने चाहिए जो
एक कुशल नेतृत्व लिए बहुत आवश्यक होता हैं। अगर प्रधानचार्य/ प्रधानाचार्या मैं कुशल नेतृत्व नहीं होता है तो कोई भी संस्था शिक्षको से सही प्रकार से काम नहीं करवा पाते हैं। कुशल नेतृत्व के अभाव में शैक्षिक संस्था व शिक्षक की स्थिति एक कटी पतंग जैसी होती हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य फरीदाबाद जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य के नेतृत्व वाली और शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की कार्य संस्कृति पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु 20 सरकारी एवं 20 निजी विद्यालयों का चयन किया गया है । शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि हेतु उमेंद्र सिंह एवं निधि मदान और प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली हेतु एस तलसेरा तथा शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक जलवायु के लिए मानकीकृत जलवायु मापनी का निर्माण किया गया है । आंकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु मध्यमान मानक विचलन आदि का प्रयोग किया गया है। विश्लेषण उपरांत पाया गया कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली और शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों के कार्य संतुष्टि परप्रभाव नहीं पड़ता है।

मुख्य शब्द , नेतृत्व शैली,संगठनात्मक संगठनात्मक जलवायु ,कार्यसंतुष्टि

प्रस्तावना

नेतृत्व एक मूल्य-परक अवधारणा है।आज भी नेतृत्व को एक व्यक्तिगत योग्यता के रूप में देखा जाता है। नेतृत्व एक ऐसा शब्द है दिमाग में आते ही राजनीति का बोध करता है। लेकिन ऐसा नहीं है यह असीमित है। समाज के विभिन्न क्षेत्रों, समाजिक , राजनीतिक, आर्थिक प्रशासनिक एवं शैक्षिक आदि में नवीन परिवर्तन आता हैं। विद्यालय एक सामाजिक संस्था हैं। जहां शिक्षक तथा अन्य कर्मचारी एक संगठित समूह के रुप में शैक्षिक कार्य करते हैं।

माध्यमिक विद्यालय में भी शिक्षक अपने- अपने-उत्तरदायित्वों का पालन करते हैं। जिनका नेतृत्व विद्यालय का प्रधानाचार्य करता हैं। उसका नेतृत्व तभी सफल माना जाता हैं। जब सभी शिक्षक उसकी योग्यता, अनुभव, कार्यकुशलता तथा ज्ञान से प्रभावित होते हैं और उसके सहयोग प्रदान करते हैं। प्रधानचार्य/प्रधानाचार्या मित्र शैली संस्था और शिक्षकों को प्रभावित करती हैं।

एक प्रधानचार्य/प्रधानाचार्या व्यक्तिगत गुणों से विभूषित होना चाहिए। उसके व्यक्तित्व में वे गुण होने चाहिए जो एक कुशल नेतृत्व लिए बहुत आवश्यक होता हैं। अगर प्रधानचार्य/ प्रधानाचार्या मैं कुशल नेतृत्व नहीं होता है तो कोई भी संस्था शिक्षको से सही प्रकार से काम नहीं करवा पाते हैं। कुशल नेतृत्व के अभाव में शैक्षिक संस्था व शिक्षक की स्थिति एक कटी पतंग जैसी होती हैं। फील्डर- के अनुसार कार्य प्रधान एवं संबंध प्रधान व्यवहार ही दो मूलभूत शैलियाँ हैं। ये शैलियां अधीनस्थों के साथ अच्छे संबंध एवं कार्य कुछ के सफल संपादन की मांग पर निर्भर करती हैं।

शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का विकास होता है। शिक्षा संस्कृति के हस्तांतरण, संरक्षण एवं संवर्धन का प्रमुख साधन है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा वहां की संस्कृति की परिचायक होती है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी शिक्षक हैं। सही अर्थो में शिक्षक ही राष्ट्र का निर्माता होता हैं। वह देश की संस्कृति एवं परंपराओं के ज्ञान रुपी दीपक को निरन्तर प्रकाशित करता रहता है। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ राधा कृष्णन सर्वपल्ली के अनुसार- "शिक्षक राष्ट्र के कल्याण व भविष्य की धरोहर के रक्षक होते हैं। " शिक्षक विद्यालय अधिगम प्रक्रिया का हृदय कहलाता है। इस शिक्षक को चरित्रवान एवं योग्यहोना चाहिए क्योंकि वह एक देखी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है तथा देश की संस्कृति का निर्माता भी होता हैं।

सभी शिक्षकों की संतुष्टि अलग-अलग होती है। प्रधानाचार्या/प्रधानाचार्य के नेतृत्व का भी शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि पर प्रभाव पड़ता है।मनोबल बढ़ाना चाहिए और उनका यह सहयोग एक शिक्षक के लिए बहुत आवश्यक होता है। स्कूल संस्था व शिक्षक के विकास व संतुष्टि के लिए एक प्रधानाचार्य को उचित नेतृत्व करने वाला होना चाहिए।

विद्यालय का वातावरण

विद्यालय के वातावरण का तात्पर्य उन संबंधों के समूह से हैं जो एक शैक्षिक समुदाय के संरचनात्मक, व्यक्तिगत और कार्यात्मक कारकों द्वारा निर्धारित होते हैं। जो स्कूलो को विशिष्टता प्रदान करते हैं। शिक्षक की नौकरी संतुष्टि में स्कूल का वातावरण एक महत्वपूर्ण कारक है। विद्यालयों का वातावरण से शिक्षक और प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या की नौकरी की संतुष्टि और व्यवसायिक एक मजबूत पाया जाता है।

प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या ही है जो शिक्षक और संस्था को जोड़ने व सही रूप से चलाने के लिए एक उचित वातावरण का निर्माण करता है। अगर स्कूल का वातावरण स्वस्थ होता है तो शिक्षक अपने आप वहा संतुष्टि का आभास हो जाता है। एक स्वस्थ संस्था के लिए शिक्षक व प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या के बीच मधुर संबंध, सहयोग का होना बहुत महत्वपूर्ण होता है।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली और शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों के कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन से संबंध रखता है। शोधार्थीनी ने समस्या चयन के लिए चिंतन किया विचार-विमर्श किया पुस्तकालय में रखे शोध ग्रंथ एवं संदर्भ पुस्तकों एवं समाचार पत्रों को पढ़ने के बाद निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय व निजी विद्यालयों में प्रधानाचार्य के नेतृत्व वाली और शैक्षणिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को प्रभावित करता है।

कार्य संतुष्टि का क्षेत्र बहुत व्यापक है इसमें हर स्तर पर दोबारा खोज कर उसमें जो कमियां रह गई हैं उन के दूर करने की कोशिश कर सकते हैं नौकरी की संतुष्टि में अभी कई ऐसी समस्याएं हैं जिनका हल या इन प्रश्नों के उत्तर हमें अब तक प्राप्त नहीं हुए हैं उन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए इस क्षेत्र में काम करने की आवश्यकता है निजी व सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच वेतन कार्य भार पर्यावरण संगठन में बहुत अंतर देखा जाता है आज बहुत सारे शिक्षक चाहे वह सरकारी व निजी स्कूलों के शिक्षक है यह अपनी नौकरी से कहीं ना कहीं और संतुष्ट नहीं दिखाई देते हैं इसीलिए इन समस्याओं की खोज कर उनका हल करना है जिसके साथ ही निजी स्कूल अध्यापक का अपनी संस्थाओं जिसमें वह कार्य करते हैं उसको लेकर भी बहुत से निजी शिक्षकों को असंतोष होते देखा गया है। कभी-कभी संस्था का व्यवहार अपने कर्मचारियों के प्रति सहयोगात्मक व सकारात्मक नहीं होता है। संपूर्ण दृष्टिकोण से यह एक शैक्षिक समस्या है जिसका अध्ययन करना वर्तमान समय को देखते हुए अति आवश्यक है और यह कारण रहा कि शोधकर्ता ने इस समस्या पर अनुसंधान करने के लिए करने का निश्चय किया है इस समस्या पर संभवत: अभी तक अन्य कोई शोध कार्य संपन्न नहीं हुआ है अतः यह एक नवीन और मौलिक समस्या होगी जिसके समाधान का प्रयास प्रस्तुत शोध में किया गया है

समस्या कथन

"फरीदाबाद के निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली और शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य:-

1. निजी और सरकारी माध्यमिक विद्यालय में शिक्षकों का कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।
2. निजी और सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध समस्या का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध कार्य फरीदाबाद जिले में किया गया है।
2. इसमें माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय निजी विद्यालयों को लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों व निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्या/ प्रधानाचार्य व शिक्षकों पर किया गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श हेतु 40 प्रधानाचार्य वह 160 शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त विधि:-

शोधकर्ता ने परिकल्पना एवं उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तावित शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण:

1.शिक्षकों के कार्य संतुष्टि मापन हेतु ओमेंद्र सिंह व निधि मदान के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि के परीक्षण का प्रयोग किया गया है।
2. प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली के लिए एस तलसेरा द्वारा निर्मित प्रिंसिपल लीडरशिप परीक्षण का प्रयोग किया गया है।
3. शैक्षणिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण के लिए एक स्वयं निर्मित मानकीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया है। जो शोधार्थिनी ने स्वयं निर्मित की है।

प्रदत्तो का संकलन

फ़रीदाबाद के निजी और सरकारी माध्यमिक विद्यालय में शिक्षकों का कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए 80सरकारी एवम 80निजी शिक्षकों से कार्य संतुष्टि परीक्षण का प्रशासन किया गया।
इसी प्रकार प्रस्तुत शोध में "फरीदाबाद के निजी एवं सरकारी शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का प्रभाव देखने के लिए एक स्वयं निर्मित मापनी का प्रयोग करके प्रद्तो का संकलन किया गया है।

प्रदतों का विवरण

नेतृत्व शैली का मापन करने के लिए 20 सरकारी और 20 निजी माध्यमिक विद्यालय के 40 प्रधानाचार्य पर प्रश्नावली प्रशासित की गई।
संगठनात्मक जलवायु का मापन कुल 160 अध्यापकों पर किया गया। यह परीक्षण फरीदाबाद हरियाणा के सरकारी एवम निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षको पर प्रशासित किया गया।

अंकन प्रक्रिया

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

सांख्यिकी के रूप में इस अनुसंधान में परिकल्पनाओ की सत्यता का मापन किया गया जिसके लिए निम्नलिखित सांख्यिकीयविधियों विधियोंका प्रयोग किया गया। मध्यमान मानक विचलन टी परीक्षण आदि जिससे 0.01 सार्थकता के स्तर पर टेस्ट किया गया।

परिणामो का प्रस्तुतीकरण, वर्गीकरण एवं अर्थापन

परिकल्पना 1: निजी और सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है

तालिका नंबर 1

निजी और सरकारी माध्यमिक विधालयो के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि की तुलना					
चर	**न्यादर्ष**	**माध्य**	**प्रामाणिक विचलन**	**टी मूल्य**	**सार्थक स्तर**
निजी माध्यमिक विधालयो के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि की तुलना	80	104	5.04	3.12	0.01 ए अंतर वं 0.05 स्तर पर सार्थक है।
सरकारी माध्यमिक विधालयो के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि की तुलना	80	106.8	06.22		

विश्लेषण:- तालिका संख्या 4.1 से स्पष्ट है कि निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान 104 और प्रमाणिक विचलन 5.04 है। और सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान 106.8 और प्रमाणिक विचलन 6.22 है। निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करने के लिए या परिकल्पना की सार्थकता जांचने के लिए टी मूल्य ज्ञात किया गया और टी मूल्य का मान 3.12 प्राप्त हुआ परिगणित टी का मान 0.01 एवं 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक सारणी मान 1.96 एवं 2.58 से अधिक है। अतः शोधार्थी द्वारा पूर्व में निर्मित परिकल्पना निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकार की जाती है।

इसका यह निष्कर्ष निकलता है कि निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य के प्रति संतुष्टि अधिक है ।क्योंकि सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों को अधिक सुविधाएं एवं वेतन प्राप्त होता है। जबकि समान योग्यता के बाद भी निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को वह सुविधाएं नहीं मिल पाती।

परिकल्पना 2:- निजी और सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण में

कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका नंबर 2

निजी और सरकारी माध्यमिक विधालयो के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण की तुलना					
चर	न्यादर्ष	माध्य	प्रामाणिक विचलन	टी मूल्य	सार्थक स्तर
निजी माध्यमिक विधालयो के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण	80	212	33.07	3.37	0.01 एवं 0.05 स्तर पर सार्थक है।
सरकारी माध्यमिक विधालयो के शैक्षिक संस्थानों का संगठनात्मक वातावरण विधालयो	80	197.3	12.03		

परिणामों का विश्लेषण:- तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है। कि निजी माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का मध्यमान 212 और प्रमाणिक विचलन 33.07 है। और सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का मध्यमान 197.3 और प्रमाणिक वितरण 23.03 है। निजी और सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन करने के लिए क्या परिकल्पना की सार्थकता जांचने के लिए मूल्य ज्ञात किया गया कि मूल्य का मान 3.37 प्राप्त हुआ और परिगणित टी का मान 00.1 एवं 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक सारणी मान 1.96 एवं 2.58 से अधिक है।

अतः शोधार्थी द्वारा पूर्व में निर्मित शून्य परिकल्पना निजी और सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शैक्षिक संस्थाओं के संगठनात्मक वातावरण में अंतर सार्थक नहीं है अतः परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष निष्कर्ष:- **प्रस्तुत शोध के माध्यम से** यह निष्कर्ष निकलता है कि निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य के प्रति संतुष्टि अधिक है ।क्योंकि सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों को अधिक सुविधाएं एवं वेतन प्राप्त होता है। जबकि समान योग्यता के बाद भी निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को वह सुविधाएं नहीं मिल पाती। इसका मुख्य कारण सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण की तुलना में निजी माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण अच्छा होता है। निजी शैक्षिक संस्थानों में हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।जिससेशिक्षक का कार्य सुगमता से संचालित हो सके।

संदर्भ

1. इंगरसोल (2002) शिक्षात्मक नेतृत्व 60(8) 30-33

2. माईखेलिनो ओर जेम्वलस (2006) ने एक पत्र प्रकाशित किया तुलनात्मक पत्रिका शिक्षकों की संतुष्टि और असंतोष के स्रोतों पर शिक्षा VOL. 35 NO. 2 PP 229-471.

3. M.E.D. Book शैक्षिक प्रबंधन और प्रशासन में पाठ 10 नेतृत्व में शैली के प्रकार.

इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ प्योर एडं एलाइड मैथमेटिक्स वाल्यूम 119 नम्बर 72018,2654-2655 ISSH:1311- 8080.

मेहता एस (2012) शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि आईयूपी जर्नल ऑफ ऑगनाइजेशन व्यवहार, 12(2) 581.

सूकी, एनएम, (2011) नौकरी की संतुष्टि और संगठनात्मक प्रतिबद्धता |मनोविज्ञान अनुसंधान की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका

6(5) 1-15 .

4. www.investopedia/https//statrek.com/survey-reseach/ sampling methodology aspx:tutorial=ap

5.Azirib job satisfaction a litearture and review. Mangement research and practice vol. 3 issue

4(2011) pp. 77.88